गोड्डा कॉलेज, गोड्डा

शिक्षक का नाम	विषय	वर्ग	शीर्षक
मो० महताब अहमद	TC-201	B.Ed Sem-II	अभिप्रेरणा (MOTIVATION)

M.M. Ahmad

Scanned by CamScanner

अभिप्रेरणा (MOTIVATION)

अभिप्रेरणा का अर्थ (MEANING OF MOTIVATION)

अभिप्रेरणा मनुष्य के कार्य और व्यवहार को एक दिशा प्रदान करने वाली शक्ति है। 'अभिप्रेरणा' शब्द अंग्रेजी के Motivation शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। Motivation शब्द की उत्पत्ति लैटिन Motum शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है ~~Move, Motor~~ मूव (Move), मोटर (Motor) और मोशन (Motion) अर्थात गति या क्रिया। अभिप्रेरणा के साधारण और शाब्दिक अर्थ के अनुसार हम किसी भी उत्तेजना को प्रेरणा कह सकते हैं, जिसके कारण व्यक्ति कोई प्रतिक्रिया या व्यवहार करता है। इस प्रकार उत्तेजना आन्तरिक या बाह्य दोनों हो सकती है। किन्तु मनोवैज्ञानिक अर्थ में प्रेरणा का अभिप्राय केवल आन्तरिक उत्तेजनाओं से होता है, जिन पर व्यक्ति का व्यवहार आधारित होता है। यह एक अदृश्य शक्ति है, जिसे देखा नहीं जा सकता है।

अभिप्रेरणा की परिभाषाएँ (DEFINATIONS OF MOTIVATION)

(i) गुड (Good) के अनुसार "प्रेरणा किसी क्रिया को शुरू करने, जारी रखने और नियमित करने वाली प्रक्रिया है।"

(ii) पी० टी० यंग (P.T. Young) के शब्दों में "प्रेरणा किसी कार्य को जाग्रत करने, उसकी प्रगति से सम्बन्धित गतिविधियों को जारी रखने और कार्य के तरीकों को नियमित करने की प्रक्रिया है।"

(iii) फिशर (Fischer) ने अभिप्रेरणा को परिभाषित करते हुए लिखा है "अभिप्रेरणा किसी क्रिया की ओर झुकाव या ओर है जिसमें कुछ अंश अभिमुखता एवं निर्देशन का भी होता है।"

(iv) वुडवर्थ (Woodworth) "प्रेरणा परिणाम के त्वरित ज्ञान से उत्पन्न होती है।"

(v) लावेल (Lowell) के अनुसार "प्रेरणा को और अधिक स्पष्ट करने के लिए उसे किसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु होने वाली ऐसी मनोवैज्ञानिक अथवा आन्तरिक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा ~~सकता~~ सकता है जो उसे आवश्यकता की पूर्ति के साथ-साथ सन्तुष्टि प्रदान करती है।"

(vi) जेम्स ड्रेवर (James Drever) के शब्दों में "प्रेरणा एक भावात्मक क्रियात्मक कारक है जो किसी व्यक्ति के व्यवहार को चेतन अथवा अचेतन रूप में किसी परिणाम या लक्ष्य की ओर प्रवृत्त होने की

Scanned by CamScanner

प्रेरणा की प्रकृति, स्वरूप और विशेषता (NATURE AND CHARACTERISTICS OF MOTIVATION)

(i) प्रेरणा मनुष्य की एक आन्तरिक शक्ति है, जो ऊर्जा परिवर्तन के सिद्धान्त पर कार्य करती है।

(ii) यह एक प्रक्रिया है जिसका परिणाम सफलता, असफलता अथवा समायोजन के रूप में सामने आता है।

(iii) इसके द्वारा व्यक्ति का व्यवहार किसी सुनिश्चित या अनुमानित लक्ष्य की ओर निर्देशित होता है।

(iv) इसके लिए किसी न किसी प्रकार की आवश्यकता का होना जरूरी है।

(v) अभिप्रेरणा उत्पन्न करने वाले कारकों को अभिप्रेरक कहते हैं।

(vi) प्रेरणा के द्वारा प्रारम्भ किया गया कार्य प्रणाली द्वारा संतुष्टि प्राप्त करने तक निरन्तर जारी रहता है।

(vii) इस प्रक्रिया में व्यक्ति की भावनाएँ, संवेग, मूल प्रवृत्तियाँ तथा इच्छाएँ आदि आनुवांशिक विशेषताएँ सक्रिय रहती है।

(viii) यह एक जीवन-पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

(ix) अधिगम में प्रेरणा का महत्वपूर्ण योगदान होता है तथा सीखने के लगभग सभी सिद्धान्त अभिप्रेरकों द्वारा प्रेरित अनुक्रियाओं पर आधारित हैं। अधिगम मनोविज्ञान की भाषा में प्रेरक को उद्दीपक कहा जाता है।

(x) अभिप्रेरणा एक क्रियात्मक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति सतत् क्रियाशील रहता है।

(xi) अभिप्रेरणा में कभी-कभी उत्तेजना और मानसिक तनाव की अवस्था भी आ जाती है।

(xii) किसी-किसी व्यक्ति में असफलता भी प्रेरक शक्ति का कार्य करती है।

Scanned by CamScanner

प्रेरणा के सिद्धान्त (THEORIES OF MOTIVATION)

रोजर्स और मैसलो के सिद्धान्त (Theories of Rogers and Maslow)

प्रसिद्ध मानवतावादी मनोवैज्ञानिक रोजर्स और मैसलो ने व्यक्तित्व के विकास पर अपनी-अपनी दृष्टि से विचार करते हुए दो अलग-अलग सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है, किन्तु दोनों में पर्याप्त समानताएँ भी हैं। दोनों ने मानतावादी विचारधारा को अपनाते हुए प्रत्यक्षीकरण को विशेष महत्व प्रदान किया है। दोनों के सिद्धान्त अभिगम के सिद्धान्तों के रूप में भी जाने जाते हैं। अतः स्वाभाविक रूप से ये सिद्धान्त अभिप्रेरणा की क्रिया-प्रणाली से भी सम्बद्ध हो जाते हैं।

रोजर्स ने मानव मन के चेतन तथा अचेतन दोनों प्रकार के रूपों द्वारा प्राप्त अनुभवों को महत्वपूर्ण माना है। उसके अनुसार इन अनुभवों की सम्पूर्णता धीरे-धीरे आत्मन की भावना जाग्रत करती है जो व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व से सम्बन्धित व्यवहार के लिए प्रेरित करती है। यह अभिप्रेरणा शनैः-शनैः व्यक्ति को आत्म सम्प्रत्यय आदर्शवादी आत्मन तथा आत्म-सिद्धि की ओर ले जाता है।

मैसलो ने भी प्रत्यक्षीकरण पर पर्याप्त बल देते हुए व्यक्तित्व विकास के लिए अभिप्रेरणा के पाँच स्तरों का प्रतिपादन किया है। उसने अभिप्रेरणा के अनुक्रमी सिद्धान्त की अपनी विशिष्ट व्याख्या भी प्रस्तुत की है। उसके अनुसार कोई व्यक्ति अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ अभिप्रेरित होते हुए सर्वप्रथम अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। उसके बाद वह अपनी सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं की ओर उन्मुख होता है। उक्त दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने के बाद उसे प्रेम एवं अपनत्व की आवश्यकता अनुभव होती है जो क्रमिक रूप से सम्मान तथा आत्म सिद्धि की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उसे प्रेरित करती है।

Scanned by CamScanner